Ques:- Distinguish between early and later Behaviourism.

प्रारंभिक व्यवहारवाद तथा उत्तरकालीन व्यवहारवाद में अन्तर स्पष्ट करें।

Ans:-

मनोविज्ञान में व्यवहारवादी सम्प्रदाय के अनुसार मनोविज्ञान प्राकृतिक विज्ञान की एक विशुद्ध प्रयोगात्मक शाखा है। उसका उद्देश्य व्यवहार की व्याख्या, नियंत्रण और उसके विषय में भविष्यवाणी करना है। व्यवहारवादी मनोविज्ञान की पद्धतियों को विशुद्ध वैज्ञानिक रूप देना चाहते थे। अतः वे अन्तर्दर्शन (Introspection) [redacted] विधि के विरोधी थे। व्यवहारवादी चेतना के साथ-2 मानसिक दशाओं, मन, संकल्प, प्रतिमा इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग नहीं करना चाहते। वे सम्पूर्ण व्यवहार को उत्तेजना और उसकी अनुक्रिया के शब्दों में समझना चाहते हैं।

व्यवहारवाद को दो भागों में बांटा गया है:

1. प्रारंभिक / आरंभिक व्यवहारवाद (Early Behaviourism)

2. उत्तरकालीन व्यवहारवाद (Later Behaviourism)

आरंभिक व्यवहारवाद में वाटसन, इबिंगहॉस, पैवलव, थार्नडाइक का नाम प्रसिद्ध है जबकि उत्तरकालीन व्यवहारवाद में गुथरी, हल, स्कीनर, टालमैन, बैण्डुरा आदि का नाम प्रमुख है।

प्रारंभिक व्यवहारवाद और उत्तरकालीन व्यवहारवाद में निम्नलिखित अंतर हैं:—

1. उत्तरकालीन व्यवहारवादियों के संप्रत्यय, विचारधारा, एवं सिद्धान्त नियंत्रण सबूत तथा प्रयोगात्मक समर्थन पर आधारित हैं जबकि प्रारंभिक व्यवहारवादियों के संप्रत्यय, विचारधारा, एवं सिद्धान्त का आधार ऐसा प्रयोगात्मक

Scanned with CamScanner

समर्थन नहीं बल्कि मात्र परिवर्तन (Evolution) पर आधारित है।

2. इन दोनों व्यवहारवाद में एक अंतर यह है कि व्यक्ति किस प्रकार अपने व्यवहार को उन्नत करता है। वाटसन ने व्यक्ति द्वारा व्यवहार को उन्नत करने हेतु कोई विशेष विधि या उल्लेख नहीं किया है। उन्होंने व्यवहार को उन्नत बनाने के लिए मात्र सामान्य विषय पर कुछ बल डाला था लेकिन उत्तरकालीन व्यवहारवादियों द्वारा व्यवहार परिमार्जन की कई विधियों का वर्णन किया गया है। इन विधियों द्वारा व्यक्ति की आदतों एवं अन्य व्यवहारों को उन्नत बनाने में काफी सफलता मिली है।

3. आधुनिक समय में आरंभिक व्यवहारवाद के मात्र कुछ संप्रत्ययों को ही स्वीकार किया गया है लेकिन उनके समग्र संप्रत्ययों की प्रशंसा नहीं की गयी है। दूसरी ओर, उत्तरकालीन व्यवहारवादियों के समग्र संप्रत्ययों और विचारों की आधुनिक आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रशंसा की गयी है और उसे यथार्थपूर्ण बताया गया है।

4. उत्तरकालीन व्यवहारवादियों द्वारा मात्र कुछ चयनित क्षेत्रों जैसे- सीखना, प्रेरणा आदि में ही रुची दिखायी गयी है। अतः इनका दृष्टिकोण बिन्दु-केन्द्रित था। दूसरी ओर आरम्भिक व्यवहारवादियों का कार्यक्षेत्र अधिक विस्तृत रहा है। इन लोगों द्वारा कई प्रकार के संप्रत्ययों जैसे, स्मृति, संप्रत्ययों, संवेग, चिन्तन, सीखना आदि के अध्ययन में रुचि दिखाई गयी है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यवहारवाद एक सम्प्रदाय के रूप में विकसित हुआ। यह संरचनावाद तथा प्रकार्यवाद मनोविज्ञान के विरुद्ध विद्रोह था। मनोविज्ञान की प्राचीन पद्धतियों, विचारधाराओं और सामग्री को उखाड़ फेकने के लिए एक आंदोलन के रूप में इस संप्रदाय का जन्म हुआ।

Scanned with CamScanner

Page No.: (03)
Date: / /

इसके जन्मदाता के रूप में watson का नाम प्रमुख है। व्यवहारवाद के संस्थापन के बाद नव-व्यवहारवादियों ने watson के संप्रदाय को विभाजित कर दिया। इस विभाजन का स्पष्ट रूप 1930 में प्रकट हुआ, जबकि व्यवहारवाद को दूसरे सिद्धान्तों तथा नियमों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया। दूसरे शब्दों में उत्तरकालीन व्यवहारवाद का जन्म सीखने के सिद्धान्तों से आरम्भ हुआ। दोनों व्यवहारवादों के बीच मुख्य रूप से चार अन्तर दिखायी देते हैं।

06/7/2020